गोखरू

(Tribulus terrestris)

कुल	:	**Zygophyllaceae**
आयुर्वेदिक नाम	:	गोखरू, गोक्षुर
यूनानी नाम	:	खार–ए–खरूक खुर्द, अल–गुलाब
संस्कृत नाम	:	गोक्षुरक, त्रिकण्ट, गोकण्टक, स्वादुकण्टक, इक्षुगन्धिका, चणद्रुम
हिन्दी नाम	:	छोटा गोखरू, हाथी चिकार
अंग्रेजी नाम	:	**Punctured vine, Tackweed, Devil's eyelash, Devil's thorn, Bull head, Cat's head, Caltrop, Goat's head, Ground bar nut, Devil's weed**
व्यापारिक नाम	:	गोखरू
उपयोगी भाग	:	जड़, फल, पंचांग

रासायनिक संरचना

गोखरू में अनेक स्टेरॉयडल सेपोनिन्स, फ्लेवेनॉइड्स, ग्लायकोसाइड्स, अल्कलॉइड्स तथा टैनिन्स पाये जाते हैं। इसमें पाये जाने वाले सेपोनिन्स में सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रोटोडायोसिन (protodioscin), प्रोटोग्रेसिलिन (protogracillin), डायोसजेनिन (diosgenin), तथा ट्राइगोजेनिन (trigogenin) है। टेरिस्ट्रिबिसामाइड (terristribisamide), तथा ट्राइबुलस्ट्राइन (tribulustrine), नामक बीटा कार्बोलिन हर्मेन तथा नोरहर्मेन (Beta carboline hermane and norhermane) प्रमुख अल्कलॉयड्स हैं।

औषधीय गुण

गोखरू मूत्रवर्धक (diuretic), कामोद्दीपक (aphrodisiac), क्षुधावर्धक (stomachic), स्तम्भक (astringent), शांतिदायक (palliative), मधुमेहरोधी (antidiabetic), हृदय शक्ति दाता (cardio tonic), पथरी नाशक (antiurolithic), प्रतिरक्षातंत्र अनुकूलक (immune modulator), कोलेस्टेरोल घटाने वाला (hypolipidemic), तथा यकृत रक्षक (hepatoprotective), गुण पाये जाते हैं। यह केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र (central nervous system) को भी मजबूती प्रदान करता है।

औषधीय उपयोग

गोखरू के समस्त पादपांग उपयोगी हैं। इसका उपयोग आयुर्वेदिक, चीनी, यूनानी तथा सिद्धा औषधीय प्रणालियों मे अनेक रोगों के उपचार में किया जाता हैं। यह वात, पित्त तथा कफ तीनों प्रकार के दोष निवारण में उपयोगी है। यह टेस्टोस्टेरोन तथा एस्ट्रोजन हार्मोन्स के स्तर को बढ़ाता है।

इस कारण इसका प्रयोग आहार पूरक के रूप में, माँसपेशियों के विकास, एथलेटिक प्रदर्शन तथा बॉडी बिल्डिंग हेतु किया जाता है। पुरूष यौन शक्तिवर्धक तथा कामेच्छावर्धक एवं स्त्रियों मे बांझपन दूर करने वाली औषधियों के निर्माण में गोखरू का प्रमुखता से उपयोग किया जाता है। इसके अलावा सामान्य जीवन शक्ति (general vitality) वर्धक औषधियो के निर्माण में भी इसका प्रयोग किया जाता है। यह रक्त शर्करा एवं कोलेस्टेरोल को घटाता हैं। इसका काढ़ा सिरदर्द को दूर करता है तथा हाजमा सुधारता है। इसके फलों का चूर्ण दमा, दस्त, गर्भाशय शूल, मूत्रकृच्छ, पथरी, आमवात जैसे रोगों के उपचार में उपयोगी है।

इसके अलावा गोखरू अन्य बीमारियों, जैसे सुजाक, अश्मरी, बस्तिशोध, वृक्क विकार, प्रमेह, ज्वर, रक्त पित्त, नाक – कान से रक्त श्राव होने, उच्च रक्त चाप, शरीर के ऊतकों में पानी भरने के कारण होने वाली सूजन, इत्यादि के उपचार में भी उपयोग में लाया जाता है।

वितरण

गोखरू मूलतः मध्यपूर्व एवं भूमध्य सागरीय देशों का पौधा हैं परन्तु यह व्यापक रूप से लगभग सभी महाद्वीपों – एशिया, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका, अमेरिका में 35° दक्षिणी तथा 47° उत्तरी अक्षांश के बीच पाया जाता है। अनेक स्थानों पर यह खरपतवार के रूप में प्राकृतिक रूप से उगता है। भारत में भी यह सभी जगह मिल जाता है।

आकारिकी

यह भूमि पर फैलने वाला छोटा एकवर्षीय पौधा है। यह जुलाई – अगस्त माहों में खाली जमीन पर उग जाता है। इसका तना रोमिल एवं शाखायुक्त होता है तथा इसकी शाखाये 1 मीटर तक के दायरे में फैल जाती है। इसके पत्ते चने के पत्तों के समान परन्तु आकार में उनसे कुछ बड़े होते हैं। इसके फूल पीले रंग के, 4 से 10 मि.मी. चौड़े, पाँच पखुडियों वाले होते है। इसके फल छोटे, कड़े और कंटीले होते है। प्रत्येक खंड पर दो जोड़े नुकीले ऊपर की ओर उठे हुए कॉटे होते है जिनमें से एक जोड़ा कुछ लम्बा होता हैं। प्रत्येक खंड में सुगंधित तेलयुक्त बीज होते हैं। गोखरू के पौधे में एक मुख्य जड़ होती है। साथ ही बारीक सहायक जड़ो

(rootlets), का जाल भी होता है।

जलवायु एवं मृदा

यह शुष्क जलवायु का पौधा है। यह सभी प्रकार की मृदाओं, यहाँ तक कि बंजर भूमियों पर भी आ सकता हैं परन्तु रेतीली दोमट मिट्‌टी इसकी खेती के लिए अधिक उपयुक्त होती है।

कृषि तकनीक

गोखरू के बीजों को सीधे खेत मे बोया जा सकता है। अतः पौधशाला में इसके पौधे तैयार करने की आवश्यकता नहीं है। प्रति हेक्टेयर 10 कि.ग्रा. बीज की आवश्यकता होती है। बीज की बुवाई हल द्वारा जून – जुलाई में एक वर्षा हो जाने पर कभी भी की जा सकती है। कतारों के बीच की दूरी 4 फीट (120 से.मी.) रखी जा सकती है। एक हेक्टेयर क्षेत्र में लगभग 2750 पौधे लगते है। गोखरू की फसल के लिए किसी प्रकार की खाद अथवा सिंचाई की सामान्यतया आवश्यकता नहीं पड़ती है। इस फसल में किसी प्रकार की बीमारी भी नहीं लगती है। आवश्यकतानुसार निंदाई – गुड़ाई अवश्य कर देना चाहिए। खाद, सिंचाई, कीटनाशक इत्यादि की आवश्यकता न होने से अन्य फसलों की तुलना में गोखरू की खेती में बहुत कम लागत आती है।

फसल कटाई प्रबंधन

फसल में पत्ते जब सूखने लगें, तब इसे जड़ सहित उखाड़ कर खेत में उसी स्थान पर एक – दो दिन तक सूखने देना चाहिए। तत्पश्चात उन्हें एकत्र कर एक स्थान पर फैलाकर सुखाना चाहिए। इसी समय पौधों की जड़ों को काटकर अलग कर देना चाहिए। यह क्रिया पौधे उखाड़ने के समय भी की जा सकती है। पौधे पूर्णतया सूखने के पश्चात फलों (गोखरू) को झाड़ कर अलग कर उन्हें एकत्र कर लेते है। चूँकि इस पौधे के जड़, फल, पत्तों तथा पंचांग का उपयोग अलग–अलग प्रकार से विभिन्न प्रकार की बीमारियों के उपचार एवं औषधि निर्माण में होता हैं, अतः बाजार की माँग के अनुसार ही विभिन्न पादपांगों का एक साथ अथवा अलग – अलग संग्रहण व अस्थायी भण्डारण किया जा सकता है।

उपज

एक हेक्टेयर क्षेत्र में 50 से 60 क्विन्टल सूखे फल (गोखरू) का उत्पादन होता है, जो कि प्रमुख उपज है। इसके अलावा सूखी जड़े, पत्तियाँ व तना भी बाजार माँग के अनुसार विक्रय योग्य है, जिनसे अतिरिक्त आमदनी हो सकती है। विभिन्न रोगों के उपचार में उपयोगी होने के कारण इसकी बाजार माँग निरंतर बढ़ती जा रही है तथा प्राकृतिक उपलब्धता कम हो रही है। अतः इसकी खेती लाभकारी हो सकती है।

ई–चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले–स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।

क्षेत्रीय संचालक

क्षेत्रीय–सह–सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर–482008 (म.प्र.)

संपर्क : 0761–2665540, 9300481678, 9724658622, फैक्स : 0761–2661304

ई–मेल : rcfc_sfri817@rediffmail.com, sdfri@rediffmail.com

वेब : http://www.rcfccentral.org

Amrit # 8349634350

गोखरू

(Tribulus terrestris)

क्षेत्रीय–सह–सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा
और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2020